JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# भारतीय स्वतंत्रता के क्रांतिकारी आन्दोलनों में महिलाओं की सहभागिता

डॉ. शिच चरण चेड़वाल
सहायक आचार्य इतिहास
बाबू शोभाराम राजकीय महाविद्यालय अलवर

**शोध सारांश**– प्राचीन काल से ही मातृ सत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था के तहत कबीले की मुखिया महिला होती थी। यह उसके राजनीति में सक्रिय भूमिका को प्रदर्शित करता है। पौराणिक कथाओं में देवियों तथा उत्खनन में प्राप्त मूर्तियों से यह स्वतः ही पता चल जाता है कि महिलाएॅ प्रारम्भ से ही शक्ति, साहस से पूर्ण थी। कालान्तर में मध्य काल में रजिया बेगम के शासन को कौन भूल सकता है? आजादी की लड़ाई में अंग्रेजों से लोहा लेनी वाली झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई तो भारत के हर छोटे से छोटे बच्चे को याद है। समाज सुधारकों के प्रयासों तथा पुर्नजागरण के प्रभाव के कारण महिलाओं में राजनीतिक चेतना जागृत हुई, जिजसे 20 वीं सदी के प्ररम्भ में हुए स्वदेशी आन्दोलन में अपनी भागीदारी देकर भारत की राजनीति में अपना प्रभाव डालने में सफल रही।

**शब्द कुंजी**– क्रांतिकारी आन्देलन, महिलाएॅ, स्वदेशी आन्दोलन

**प्रस्तावना** - भारत की स्वतंत्रता के लिए अंग्रेजों के विरुद्ध दो प्रकार के आन्दोलन चल रहे थे - एक अहिंसक आन्दोलन एवं दूसरा सशस्त्र क्रांतिकारी आन्दोलनों 1857 से 1947 तक भारत की आजादी के लिए हुए संघर्षों में क्रान्तिकारियों द्वारा किये गये प्रयत्न ही अधिक प्रेरणादायी है। इस कारण भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग है। भारत माता के प्रति जितनी भक्ति और मातृ भावना उस युग में थी, उतनी कभी नहीं रही। क्रान्तिकारी मातृभूमि की सेवा और उसके लिए मर मिटने हेतु सदैव तैयार रहते थे। वे भारत माता के पैरों में बंधी गुलामी की जंजीरों को तोड़ने के लिए हर समय शस्त्र उठाने के लिए तत्पर रहते थे तथा हिंसक माध्यमों से ब्रिटिश शासन को भयभीत कर, आतंकित कर देश से निकाल देना चाहते थे। उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम चरण में भारतीय जनता की कठिनाईयों के प्रति शासन की उदासीनता ने भारतीय नवयुवकों के मन में शासन के प्रति आक्रोश की भावना का प्रादुर्भाव हुआ और शासन को मिटाने हेतु शस्त्रों का प्रयोग करना ही होगा, इस विचारधारा ने देश में क्रान्तिकारी आन्दोलन को जन्म दिया। इसमें न केवल पुरुषों अपितु महिलाओं ने भी बढ़ चढ़कर भाग लिया था और भारत की स्वाधीनता की प्राप्ति के प्रयासों में हँसते हुए अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया था।

भारतीय स्वतंत्रता के क्रान्तिकारी आन्दोलनों में अनेक महिलाओं ने अपनी सहभागिता निभाते हुए महत्वपूर्ण योगदान दिया था। कुछ महिलाओं को छोड़कर अधिकांश महिलाओं के नाम इतिहास के पन्नों पर दर्ज नहीं हो पाए। क्रान्तिकारी महिलाओं द्वारा अनेक गतिविधियाँ में भागीदारी की गई थी । प्रारम्भ में इनसे सिर्फ गोपनीय सूचनाएं देने या कागजात छिपाने के लिए कहा जाता था, लेकिन बाद में ये संगठनों में जुड़कर क्रान्तिकारी आन्दोलन में शामिल हो गई थी। अधिकांश महिलाएं 20वीं सदी की शुरूआत में सक्रिय दो सबसे ताकतवर क्रांतिकारी संगठनों - **अनुशीलन समिति** तथा **युगांतर** के साथ जुड़ी थी। ये संगठन देश की स्वाधीनता के लिए गोरे अधिकारियों की हत्याओं को करने में हिचकिचाता नहीं था। इस कारण से इनमें भाग ले रही महिलाओं के साथ शासन द्वारा काफी अत्याचार और जुर्म हुए थे, जैसे अनेक महिलाओं को घरों में नजरबंद अथवा जेल की काल कोठरी में डाल दिया जाता था एवं सजा भी आजीवन कारावास या मृत्युदंड की दी जाती थी। फिर भी क्रांतिकारी महिलाएँ अपनी मातृभूमि के लिए शहीद होने के लिए हर समय तैयार रहती थी । इतिहास गवाह है कि इन क्रांतिकारी महिलाओं ने समय-समय पर पर बहादुरी और साहस का परिचय दिया एवं पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिला

कर चली थी । इन्होंने निडर होकर क्रांतिकारी गतिविधियों को अंजाम दिया था और कुछ ऐसी क्रांतिकारी महिलाएँ थी जिन्हें किसी भी युग में न भुलाया जा सकने वाला काम किया और अमर हो गयी। ऐसी कुछ क्रांतिकारी महिलाओं का विवरण इस प्रकार है:-

1. **ऐनीबेसेण्ट** थियोसोफिकल सोसाइटी और भारतीय होमरूल आंदोलन में अपनी विशेष भूमिका निभाने वाली ऐनीबेसेण्ट का जन्म 1847 में आयरलैंड में हुआ था। 1890 में हेलेना ब्लावत्सकी द्वारा स्थापित थियोसोफिकल सोसाइटी, जो हिन्दू धर्म और उसके आदर्शों का प्रचार- प्रसार करती थी, उसकी सदस्य बन गई। भारत आने के बाद वह महिला अधिकारों के लिए लड़ती रही। महिलाओं की वोट जैसे अधिकारों की मांग करते हुए ब्रिटिश सरकार को पत्र लिखती रही। उसने स्वराज्य के लिए चल रहे होमरूल आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

2. **मैडम भीकाजी कामा -** यह भारतीय मूल की पारसी महिला थी जिन्होंने विदेशों में भारत की स्वतंत्रता के पक्ष में माहौल बनाया था। उन्होंने जर्मनी के स्टुटगार्ट नगर में 1907 में हुई सातवीं अंतराष्ट्रीय कांग्रेस में भारत का प्रथम राष्ट्र ध्वज तिरंगा फहराया था। उनके द्वारा पेरिस से 'वन्देमातरम' पत्र प्रकाशित किया जाता था। वह लन्दन में दादा भाई नौरोजी की प्राइवेट सेक्रेटरी भी बनी थी। उनके द्वारा भारत की स्वाधीनता के लिए विश्व जनमत जाग्रत करने का महत्वपूर्ण कार्य किया गया तथा उन्होंने स्वाधीनता के लिए लड़ते हुए लम्बी अवधि तक निर्वासित जीवन बिताया था। वह लंदन स्थित इंडिया हाउस से सम्बंधित लोगों को क्रांति की शिक्षा देती थी।

3. **लक्ष्मी सहगल** नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की अन्नय अनुयायी के तौर पर वे इंडियन नेशनल आर्मी में शामिल हुई थी। उन्होंने पेशे से चिकित्सक होते हुए भी महिला रेजीमेंट का नेतृत्व किया था। कमांडर लक्ष्मी सहगल ने रानी झांसी रेजीमेंट का संचालन का उत्तरदायित्व पूरी लगन व हिम्मत के साथ निभाया था। देश की आजादी के बाद सरकार में नारी कल्याण और मेडिकल सोशल वेलफेयर मिनिस्टर के रूप में अपनी सेवायें दी थी।

4. **दुर्गा भाभी -** इनका जन्म 1907 को इलाहाबाद में हुआ था। यह भगवती बाबू जैसे महान् क्रांतिकारी की पत्नी थी। उन्होंने अपने पति के साथ क्रांतिकारी गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लिया था। वे उनके क्रांतिकारी कार्यों के लिए पैसा इकट्ठा करती थी। क्रांति से संबंधित परचे बाँटती थी। भगत सिंह द्वारा सांडर्स की हत्या करने पर वह भगत सिंह की पत्नी के रूप में उनको सकुशल बचाने के लिए उनके साथ कलकत्ता गई। इस साहसपूर्ण कार्य करने में वह बिल्कुल भी नहीं घबराई थी। उन्होंने गाँधीजी को भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरू को छुड़ाने की शर्त वायसराय के सामने रखने के लिए कहा था। बम्बई में भाभी ने बाबा पृथ्वीसिंह व आजाद के सहयोग से पुलिस कमिश्नर हेली को मारने की योजना बनाई लेकिन वह असफल रही।

5. **सरला देवी -** इन्होंने स्वदेशी आंदोलन और बंग-भंग आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इन्होंने अनेक क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लिया और 1905 में बंगाल और पंजाब के क्रांतिकारियों के बीच संपर्क सूत्र का काम किया था। 'सुहृदय समितियों' द्वारा वे युवा सदस्यों को व्यायाम तथा हथियार चलाना सिखाती थी।

6. **हरदेवी और कुमुदिनी मित्र** - ये क्रांतिकारी महिलाऐं क्रांतिकारी गतिविधियों के लिए धन इकट्ठा करती थी । यह अनेक क्रांतिकारी साहित्यों और पेमप्लेटों का वितरण कर लोगों में राष्ट्रीय चेतना का संचार करती थी । अधिकाधिक आमजन को क्रांतिकारियों को समर्थन देने के लिए प्रेरित करने हेतु प्रयासरत थी।

7. **प्रकाशवती -** लाहौर की रहने वाली प्रकाशवती अपनी अध्यापिका प्रेमवती के माध्यम से अपनी अन्य सहेलियों के साथ मिलकर क्रांतिकारियों की आर्थिक सहायता करती थी। क्रांतिकारी यशपाल से मिलने के बाद उसने अपने घर को छोड़ दिया और क्रांतिकारी दल में शामिल हो गई। बाद में उन्होंने क्रांतिकारी यशपाल से विवाह किया था।

8. **प्रीतिलता वाडेकर-** बंगाल की प्रीतिलता, कॉलेज के प्रारम्भिक दिनों में क्रांतिकारियों के सम्पर्क में आई थी तथा 'दीपावली संघ' की सदस्य बन गई थी। यह संस्था देश भक्तों को लाठी तथा तलवार चलाने का प्रशिक्षण देती थी। उन्होंने इंडियन सोशलिस्ट रिपब्लिक दल की इंडियन सोशलिस्ट आर्मी में भी प्रशिक्षण प्राप्त किया था। क्रांतिकारी दल ने शैलेश चक्रवर्ती के असफल होने पर उनको चिटगाँव के यूरोपियन क्लब पर आक्रमण का दायित्व सौंपा, उन्होंने क्लब की खुली खिड़की से दो बम फैंके तथा गोलियाँ चलाई तथा मौके से सभी क्रांतिकारियों को भगा दिया था। स्वयं ने पोटेशियम साइनाइड खाकर अपने प्राणों को देश के लिए न्यौछावर कर दिया था। इनकी स्कूल की एक सहेली कल्पना दत्त ने भी ढालघाट की 'नारी समिति' की सदस्य बनकर गुप्त रूप से क्रांतिकारियों का समर्थन किया।

9. **क्रांतिकारी वीणादास -** इनका जन्म 1911 में चटगाँव (बंगाल) में हुआ था। अपनी बड़ी बहन कल्याणी के प्रभाव से वह क्रांतिकारी बन गई थी। 6 फरवरी 1932 को वह अपनी स्नातक की डिग्री लेने के लिए कलकत्ता विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में भाग लेने के लिए गई थी। वहाँ उपस्थित गर्वनर पर उन्होंने गोलियाँ चलायी परन्तु वह असफल रही और उसे नौ वर्ष का कठोर कारावास का दंड मिला था।

**10. शान्ति सुधा घोष**– इन्होंने बारीसाल में अपनी अनेक मित्रों जैसे लीला चटर्जी, अनिला चटर्जी, मुकुल सेन, निर्मला घोष, अपराजिता घोष आदि के साथ मिलकर 'नारी शक्ति वाहिनी' नामक संस्था का गठन किया था। इस संस्था में लड़कियों को व्यायाम तथा हथियार चलाने का प्रशिक्षण दिया जाता था। 1932 में कलकत्ता आकर कल्याणी दास के सहयोग से क्रांतिकारी गुप्त गतिविधियों को अंजाम दिया तथा महिलाओं को प्रशिक्षित करने के लिए महिला संगठन भी स्थापित किया था।

**11. राजकुमारी गुप्ता -** यह अपने पति और ससुराल वालों को बिना बताए क्रांतिकारी गतिविधियों में सम्मिलित थी। वे संदेश और सामग्री को क्रांतिकारियों के पास पहुँचाने का कार्य करती थी। एक बार वह अग्नेय शस्त्रों को अपने अंतः वस्त्रों में छिपाकर और अपने तीन साल के बेटे को साथ में लेकर खेतों के माध्यम से क्रांतिकारियों के पास जा रही थी, तब उसे गिरफ्तार कर लिया गया था। इस प्रकार देश की एक सच्ची नायिका और क्रांतिकारी महिला के रूप में उनका उल्लेखनीय योगदान था ।

सारांशत: यह कहा जा सकता है कि भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में अनेक क्रांतिकारी महिलाओं जैसे **भगिनी निवेदिता, सुनीति चौधरी, उज्ज्वला, सुहासिनी गांगुली, सुशीला मित्र, इन्दुमती सिंह, कमला देवी, शन्नो देवी, सुनीति देवी, माया देवी, मृणालिनी देवी, सावित्री देवी** आदि ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी । काकेरी कांड में लतिका घोष, बीनादास, कमला दास गुप्ता और कल्याणी दास के सक्रिय योगदान को शायद ही कोई भूल सकता है। इन क्रांतिकारी महिलाओं ने कदम-कदम पर क्रांतिकारियों को सहयोग तथा समर्थन दिया। साथ ही उनके लिए धन की व्यवस्था करने, सूचनाओं को आदान प्रदान करने आदि कार्यों को बखूबी अंजाम दिया। इस साहसपूर्ण कार्यों में उन्होंने अपने प्राणों को त्याग कर भारत माता की स्वाधिनता के लिए बलिदान देकर अपने नाम को इतिहास के पन्नों में अजर अमर कर दिया था।

**संदर्भ ग्रंथ सूची:-**


1. खुराना एवं चौहान : 'भारतीय इतिहास में महिलाएँ', लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशक, आगरा, 2012
2. डॉ. विश्वनाथ शर्मा : 'हिन्दी रंगमंच का उद्भव और विकास', उषा पब्लिशिंग हाउस, जोधपुर, 1979
3. डॉ. सुरेशचन्द्र शुक्ल 'आधुनिक हिन्दी नाटक', लिपि प्रकाशन, दिल्ली, 1989
4. शर्मा, पावा : राजस्थान का इतिहास', जयपुर पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, 1991
5. डॉ. ए. के मित्तल : ' आधुनिक भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृति इतिहास', साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, 1997
6. गिरीश रस्तोगी: समकालीन हिन्दी नाटककार, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, 1998
7. यतिन्द्र सिंह सिसोदिया : 'पंचायत राज एवं महिला नेतृत्व', रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2000
8. दीप्ति प्रिया महरोत्रा: 'भारतीय महिला आंदोलन कल, आज और कल' सम्पूर्णा ट्रस्ट, नई दिल्ली, 2001
9. राधा कुमार: 'स्त्री संघर्ष का इतिहास: 1800-1960, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2002
10. प्रतिभा जैन, संगीता शर्मा: 'भारतीय स्त्री राजनीतिक संदर्भ', पब्लिशर्स, जयपुर, 2003
11. प्रेमलता तिवारी, विजय कौशिक : ' भारत में महिला शक्ति', कनिष्ठा पब्लिशर्स, इलाहाबाद, 1994